6

विद्यार्थियों के व्यवहार एवं धारणा पर देशभक्ति पाठ्यक्रम का प्रभाव

मनोज कुमार*
चित्ररेखा**

देशभक्ति वह मूल्य है जो देश के प्रति प्रेम, भक्ति, त्याग और समर्पण को दर्शाता है। किसी भी देश के स्वस्थ आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक विकास के लिए उस देश के नागरिकों में देशभक्ति मूल्य का होना अत्यंत आवश्यक है। बदलते समय के साथ-साथ हमारे देश के विद्यार्थियों और नागरिकों में देश के प्रति प्रेम, त्याग और समर्पण में बहुत तेजी से बदलाव आ रहा है। सकारात्मक और प्रगतिशील बदलावों से एक अच्छे सभ्य समाज व देश का निर्माण होता है। विद्यार्थी अपने राष्ट्र के लिए गर्व महसूस करें, उन्हें अपने देश के स्वतंत्रता सेनानियों का त्याग, बलिदान और उनको गौरव गाथाओं की जानकारी हो जिससे वे उन्हें याद रखें। देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी और कर्तव्य का एहसास कर सकें, इन सभी उद्देश्यों कि पूर्ति हेतु दिल्ली सरकार द्वारा दिल्ली निदेशालय के सभी विद्यालयों में 28 सितंबर 2021 को अलग से देशभक्ति पाठ्यक्रम लागू किया गया। देशभक्ति पाठ्यक्रम की गतिविधियों का उपयोग विद्यालयों में किस स्तर तक किया जा रहा है? विद्यार्थी देशभक्ति पाठ्यक्रम के प्रति कितने जागरूक हैं और इस पाठ्यक्रम का विद्यार्थियों के व्यवहार व उनकी धारणा पर क्या प्रभाव पड़ा? यह ज्ञात करने के लिए प्रस्तुत शोध किया गया। इस शोध में दिल्ली के दक्षिण-पश्चिम जिले से और दिल्ली निदेशालय के विद्यालयों से कक्षा सात के 100 विद्यार्थियों को निदर्शन विधि के द्वारा चुना गया। साक्षात्कार, प्रश्नावली व अवलोकन सूची का प्रयोग शोध उपकरणों के रूप में किया गया। इस शोध में पाया गया कि देशभक्ति के प्रति विद्यार्थियों के व्यवहार और सोच के दायरे में सकारात्मक व व्यापक बदलाव आ रहा है, परंतु इस बारे में अभी और नए प्रयास करने की आवश्यकता है।

**व्याख्याता* (वाणिज्य), गवर्नमेंट सर्वोदय (को.एड.) एस.एस.एस., सेक्टर 6, आर.के. पुरम, नई दिल्ली 110 022
***सहायक आचार्य*, मण्डलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, डी.आई.ई.टी. दक्षिण-पश्चिम, घुम्मनहेड़ा, नई दिल्ली 110 073

देशभक्ति मूल्य, राष्ट्रीय गौरव, एकता और एकजुटता की भावना में यह देश के इतिहास, संस्कृति, परंपराओं और विविधता का सम्मान करने को महत्व देती है। देशभक्ति के अंतर्गत लोगों की बेहतरी के लिए काम करने तथा देश की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा करने की प्रतिबद्धता शामिल है। भारतीय संविधान हमारे देश और उसके लोगों की संप्रभुता, एकता और कल्याण को बढ़ावा देने से संबंधित मूल्यों को मान्यता देता है। यह नागरिकों और सरकार को देश की प्रगति की दिशा में काम करने और इसकी राष्ट्रीय पहचान और मूल्यों को बनाए रखने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है। हमारे देश में भारतीय संविधान की प्रस्तावना, राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा में देशभक्ति के विभिन्न मूल्य परिलक्षित होते हैं।

भारतीय संविधान के 'प्रस्तावना' का भाग IV-A नागरिकों के मौलिक कर्तव्यों का वर्णन करता है, जिसमें सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना और हिंसा का त्याग करना, भारत के सभी लोगों के बीच सद्भाव और सामान्य भाईचारे की भावना को बढ़ावा देना, देश की रक्षा करना तथा ऐसा करने पर राष्ट्रीय सेवा प्रदान करना आदि शामिल हैं। ये सभी मौलिक कर्तव्य देश की एकता, शांति और रक्षा को बढ़ावा देते हैं; जो देशभक्ति मूल्य को दर्शाते हैं।

भारतीय संविधान के भाग IV में राज्य के नीति निदेशक सिद्धांत शामिल हैं, जो देश में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय सुनिश्चित करने के लिए सरकार द्वारा निर्देशित हैं। ये सिद्धांत लोगों के कल्याण और देश के विकास को बढ़ावा देने से संबंधित देशभक्ति मूल्यों पर जोर देते हैं।

भारतीय संविधान राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय चिह्न और राष्ट्रगान को देश की संप्रभुता और पहचान के महत्वपूर्ण प्रतीकों के रूप में मान्यता देता है। ये प्रतीक राष्ट्रीय गौरव और एकता को बढ़ावा देने जैसे देशभक्ति मूल्यों को दर्शाते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में मूल्य आधारित शिक्षा विकसित करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया, जो सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को बढ़ावा देती है। इस नीति के द्वारा पाठ्यक्रम में मूल्यों का शिक्षा के एकीकरण करने का भी आह्वान किया गया जिससे विद्यार्थियों में नैतिक व देशभक्ति मूल्यों को विकसित किया जा सके। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ. 2005) ने मूल्य आधारित शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला और पाठ्यक्रम में शांति, अहिंसा, सामाजिक न्याय, मानवाधिकार, लिंग संवेदनशीलता, पर्यावरण संरक्षण और नागरिक जिम्मेदारी जैसे विषयों को शामिल करने का सुझाव दिया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा के एकीकरण के माध्यम से विद्यार्थियों में नैतिक, सामाजिक और भावनात्मक दक्षताओं को विकसित करने के लिए नैतिक तर्क, पारंपरिक भारतीय मूल्य और सभी मानवीय तथा संवैधानिक मूल्यों; जैसे— सेवा, अहिंसा, स्वच्छता, सत्य, निष्काम कर्म, शांति, बलिदान, सहिष्णुता को शामिल करने का प्रावधान करती है। विधि पाठ्यक्रम के अंतर्गत

बहुलवाद, धार्मिक आचरण, लिंग संवेदनशीलता तथा सभी लोगों के प्रति सम्मान एवं पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना उनकी अंतर्निहित क्षमताओं को भी बढ़ावा देती है।

देशभक्ति पाठ्यक्रम

देशभक्ति पाठ्यक्रम 28 सितंबर 2021 को दिल्ली सरकार द्वारा दिल्ली निदेशालय के सभी स्कूलों में नर्सरी से कक्षा 12 तक के विद्यार्थियों के लिए लागू किया गया।

देशभक्ति पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में देशभक्ति और राष्ट्रीय देश के प्रति गौरव की भावना पैदा करना है। इस पाठ्यक्रम से विद्यार्थियों को भारत के इतिहास और संस्कृति के बारे में सीखने और उन्हें अपने देश के प्रति जिम्मेदारी की भावना विकसित करने के लिए बनाया गया है। देशभक्ति पाठ्यक्रम के उद्देश्य निम्नलिखित हैं— (1) बच्चों को देश के लिए गर्व महसूस कराना, (2) बच्चों को देश की गौरव गाथाओं से अवगत कराना, (3) बच्चों को देश के प्रति उनकी जिम्मेदारी और कर्तव्य का एहसास कराना। इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत नर्सरी से पाँचवीं तक, कक्षा छह से आँठवीं तक और कक्षा नौवीं से बारहवीं तक अलग-अलग स्तर पर विषय-सामग्री तैयार की गई है।

संबंधित शोध विषय की समीक्षा

भारत में देशभक्ति पाठ्यक्रम से संबंधित कई अध्ययन किए गए हैं। एम. मृदुला (2017) ने कक्षा 6–10 तक सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों की सामग्री के विश्लेषण किया और पाया कि देशभक्ति और राष्ट्रवाद के विषय का समावेश, विद्यालयी पाठ्यक्रम को और मजबूत करता है। एस. उमा शंकर और जैन संगीता (2018) ने बच्चों के बीच राष्ट्रीय पहचान और देशभक्ति विकसित करने में शिक्षा की भूमिका के अध्ययन में पाया कि पाठ्यक्रम को एक मजबूत देशभक्ति भावना के विकास पर ध्यान देने की आवश्यकता है। एस. कविता और एस. पूनम (2018) ने उत्तर प्रदेश के प्राथमिक विद्यालय पाठ्यक्रम के अध्ययन में देशभक्ति मूल्यों के समावेशन के विश्लेषण के अंतर्गत पाया कि पाठ्यक्रम में देशभक्ति सामग्री और मूल्यों को अत्याधिक व्यवस्थित करने की आवश्यकता है। एम. जयश्री और आर. राजलक्ष्मी (2018) भारतीय स्कूलों में देशभक्ति पाठ्यचर्या की रूपरेखा-विश्लेषण के अध्ययन के दौरान विभिन्न भारतीय राज्यों के देशभक्ति पाठ्यक्रम ढाँचे का विश्लेषण किया और पाया कि अधिकांश राज्यों ने अपने पाठ्यक्रम में देशभक्ति मूल्यों को शामिल किया था, लेकिन उनके दृष्टिकोण में सुसंगतता और मानकीकरण की कमी थी। आर. हिरेन (2019) ने गुजरात में माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की मूल्य प्रणाली पर देशभक्ति पाठ्यक्रम के प्रभाव का आकलन करते हुए पाया कि उन पर पाठ्यक्रम का सकारात्मक प्रभाव पड़ा। वी. राधिका और टी. शिवानी (2020) ने माध्यमिक स्तर के लिए देशभक्ति पाठ्यक्रम के विकास पर किए गए अध्ययन में पाया कि देशभक्ति मूल्यों को भाषा, सामाजिक विज्ञान और विज्ञान सहित विभिन्न विषयों में एकीकृत किया जाना चाहिए। हिना (2018) ने दिल्ली में राष्ट्रवाद

के दौरान और देशभक्ति के मूल्यों के प्रति माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की जागरूकता और दृष्टिकोण के अध्ययन में पाया कि दिल्ली में अधिकांश शिक्षकों का देशभक्ति मूल्यों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है, लेकिन उनके पास प्रभावी ढंग से पढ़ाने के लिए आवश्यक प्रशिक्षण और संसाधनों का अभाव है। चंद्र रितु (2020) ने दिल्ली के स्कूलों में देशभक्ति पाठ्यक्रम की जागरूकता और कार्यान्वयन के आकलन की जाँच करते हुए तथा इसके कार्यान्वयन में सुधार हेतु उपाय सुझाए। एस. समिधा और एस. निधि (2020) ने पाठ्यचर्या के माध्यम से नागरिकता और देशभक्ति मूल्यों के समावेश के लिए दिल्ली राज्य शिक्षा पाठ्यक्रम रूपरेखा 2018–19 का अध्ययन किया और पाया कि पाठ्यक्रम में अधिक देशभक्ति सामग्री को शामिल करने और विद्यार्थियों को देशभक्ति मूल्यों को प्रभावी ढंग से सिखाने के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है। उपरोक्त शोध साहित्य का अध्ययन करने के बाद पाया गया कि साल 2021 में पहली बार दिल्ली के विद्यालयों में अलग से देशभक्ति पाठ्यक्रम लागू किया गया। इस पाठ्यक्रम का विद्यार्थियों पर क्या, कैसा और कितना प्रभाव पड़ा, यह ज्ञात करने के लिए अभी तक कोई शोध नहीं किया गया है। इस प्रभाव को ज्ञात करने के लिए शोधकर्ता द्वारा शोध हेतु इस विषय का चयन किया गया।

अध्ययन का उद्देश्य

- विद्यालयों में किस प्रकार देशभक्ति गतिविधियों का उपयोग किया गया, यह जानना।
- विद्यार्थियों के व्यवहार एवं धारणा पर देशभक्ति पाठ्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन करना।

कार्यात्मक परिभाषाएँ

पाठ्यक्रम— शोध में पाठ्यक्रम से तात्पर्य केवल देशभक्ति पाठ्यपुस्तक में पढ़ाए जाने वाली विषयवस्तु और उनसे प्राप्त समग्र अनुभवों से हैं। यह अनुभव विद्यार्थी को कक्षा, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, कार्यशाला, खेल के मैदान और शिक्षकों तथा सहपाठियों के बीच कई अनौपचारिक संपर्कों में होने वाली विविध गतिविधियों के माध्यम से प्राप्त होते हैं।

धारणा— धारणा से तात्पर्य विद्यार्थियों की उस योग्यता से है जिसके द्वारा वे अपनी इंद्रियों के माध्यम से अपने वातावरण से संवेदी जानकारी प्राप्त करते हैं। उसका अर्थ निकालते हैं, विचार करते हैं और उसका उपयोग करते हैं। इसमें वे सभी प्रक्रियाएँ शामिल हैं जिनके द्वारा विद्यार्थी अपने आस-पास की दुनिया के बारे में अपनी समझ और जागरूकता रखते हैं।

व्यवहार— व्यवहार से तात्पर्य एक-दूसरे से बात करने, संपर्क बनाने, सामंजस्य स्थापित करने, त्याग करने, प्यार और सम्मान करने और उसे बनाए रखने की शैली से है। भाषा, सोच, हाव-भाव, विचार और आदतें व्यवहार के मुख्य कारक हैं।

अध्ययन की पद्धति

शोध अध्ययन के लिए सर्वेक्षण पद्धति अपनाई गई। यादृच्छिक सैंपलिंग पद्धति का उपयोग करके दिल्ली के दक्षिण-पश्चिम जिले से दिल्ली निदेशालय के दो विद्यालयों से कक्षा सातवीं के 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया। अध्ययन के उपकरणों में

साक्षात्कार, प्रश्नावली और अवलोकन सूची शामिल थे। देशभक्ति पाठ्यक्रम के तहत की जाने वाली गतिविधियों की जाँच करने के लिए एक अवलोकन सूची का उपयोग किया गया था, जबकि विद्यार्थियों की धारणाओं के बारे में पता लगाने के लिए एक प्रश्नावली और साक्षात्कार का उपयोग किया गया। प्रश्नावली में बंद और खुली राय वाले दोनों प्रकार के प्रश्न शामिल थे। शोध के लिए प्राप्त आँकड़ों का मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों तकनीकों की मदद से प्रतिशत के माध्यम से विश्लेषण किया गया। आँकड़ों का विश्लेषण एवं उनकी विवेचना शोध के तीनों उद्देश्यों के आधार पर की गई।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं विवेचना

उद्देश्य 1— विद्यालय में देशभक्ति गतिविधियों का उपयोग

कक्षा में देशभक्ति पाठ्यक्रम के अंतर्गत निम्नलिखित गतिविधियाँ संचालित करने का प्रावधान है—

1. **देशभक्ति ध्यान**— कक्षा देशभक्ति ध्यान से शुरू होती है। विद्यार्थी पाँच मिनट के लिए ध्यान का अभ्यास करते हुए अपना ध्यान देश पर केंद्रित करते हैं तथा अपने देश का सम्मान करने का संकल्प करने के साथ हर दिन पाँच देशभक्तों को याद करके उनका आभार व्यक्त करते हैं।
2. **देशभक्ति डायरी**— प्रत्येक विद्यार्थी को एक चिंतनशील डायरी/पत्रिका बनानी होती है। इसमें विद्यार्थी पढ़ाई जाने वाली सामग्री के संबंध में अपने विचारों, भावनाओं, सीख, अनुभवों आदि को नोट करते हैं।
3. **प्रारंभिक चर्चा**— प्रत्येक अध्याय विद्यार्थियों की रुचि और भागीदारी को बढ़ाने के लिए एक प्रारंभिक, वार्म-अप प्रश्न या संकेत के साथ शुरू होता है और उन मुद्दों के लिए दिशा भी निर्धारित करता है जिन पर विद्यार्थियों का ध्यान केंद्रित करना है।
4. **कक्षा में चर्चा**— बच्चों को बिना किसी हिचकिचाहट के अपने विचारों, राय और अनुभवों को अपने घर, समाज और देश के बारे में सोचने और साझा करने के लिए प्रेरित किया जाता है।
5. **कक्षा की गतिविधियाँ**— कक्षा की गतिविधियाँ विद्यार्थियों को कक्षा-चर्चाओं में उठाए गए प्रश्नों या मुद्दों को गहराई से समझने में मदद करती हैं।
6. **गृहकार्य**— गृहकार्य का उद्देश्य बातचीत को कक्षा से परे ले जाकर बच्चों की अपने आस-पास के लोगों, वयस्कों और परिचितों के विचार और राय जानने में मदद करना, चर्चा का दायरा बढ़ाना और विद्यार्थियों के दृष्टिकोण को व्यापक करना है।
7. **आत्म-चिंतन**— प्रत्येक अध्याय के समापन की गतिविधि के रूप में एक आत्म-चिंतनशील अभिव्यक्ति गतिविधि करना होता है जिससे बच्चों को आत्म-निरीक्षण करने और जाँचने का अवसर प्राप्त हो।
8. **झंडा दिवस**— प्रत्येक अध्याय को झंडा दिवस की गतिविधि के साथ समाप्त करना और प्रत्येक अध्याय से निर्मित व विकसित समझ के अनुसार

ऐसे कार्यों/व्यवहारों के बारे में लिखना जिनके बारे में विद्यार्थियों को लगता है कि इससे भारतीय झंडा प्रसन्न गौरवान्वित होगा या और प्रयास करना होगा।

शोध में पाया गया कि विद्यालयों में देशभक्ति पाठ्यक्रम के अंतर्गत संचालित सभी गतिविधियाँ शिक्षकों के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों के द्वारा संचालित की गईं, जैसे— देशभक्ति ध्यान, देशभक्ति डायरी, कक्षा में चर्चा आदि। देशभक्ति पाठ्यक्रम में संचालित गतिविधियाँ विद्यार्थियों में ज्ञान सृजन और चिंतन कौशल को प्रेरित करती हैं, जिससे वे अपनी समझ को विकसित कर पाते हैं। अवलोकन में पाया गया कि कक्षा चर्चा के दौरान शिक्षक ने एक सुविधाप्रदाता के रूप में कार्य करते हुए विद्यार्थियों को ज्ञान के सृजन और चिंतन कौशल के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कक्षा की चर्चाओं में कुछ ऐसे प्रमुख प्रश्नों को शामिल किया जो पूरे अध्याय की केंद्रीय धुरी बनें; जैसे— देशभक्ति क्या है? देशभक्त कौन होते हैं? क्या हम देशभक्त हैं? हम देशभक्त कैसे बन सकते हैं? विभिन्न प्रकार की कक्षा गतिविधियाँ जैसे आत्म-निरीक्षण, व्याख्या और रचनात्मक अभ्यास आदि का उपयोग करते हुए विद्यार्थियों को बातचीत करने, संवाद करने और सीखने में मदद मिली। (कुछ झलकियाँ तस्वीरों में दिखाई गई हैं।)

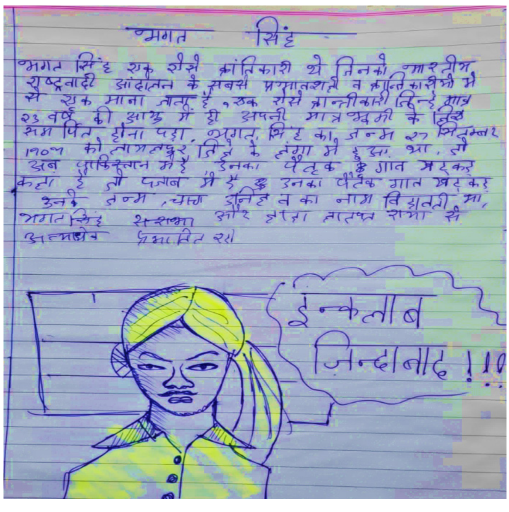

उद्देश्य 2— देशभक्ति पाठ्यक्रम के बारे में विद्यार्थियों की जागरूकता

तालिका 1— देशभक्ति की जागरूकता और समझ

प्रश्न	प्रतिशत (हाँ %)
देशभक्ति पाठ्यक्रम के उद्देश्यों से परिचित हैं	89
देशभक्ति पाठ्यक्रम के दौरान की जाने वाली सभी गतिविधियों के बारे में जानते हैं	96
देशभक्ति एवं राष्ट्रीय मूल्यों को समझ पाते हैं	91
देशभक्ति पाठ्यक्रम में शामिल विषय रुचिकर एव उपयोगी हैं	89
देशभक्ति पाठ्यक्रम आपके जीवन और अनुभवों के लिए प्रासंगिक हैं	87

विद्यार्थी देशभक्ति पाठ्यक्रम के बारे में क्या और कितना जानते हैं? तालिका 1 दर्शाती है कि लगभग 87–96 प्रतिशत विद्यार्थी देशभक्ति पाठ्यक्रम के बारे में जागरूक हैं और उसकी समझ रखते हैं। 89 प्रतिशत विद्यार्थी देशभक्ति पाठ्यक्रम के उद्देश्यों से परिचित हैं। 91 प्रतिशत विद्यार्थी देशभक्ति एवं राष्ट्रीय मूल्यों को समझ पाते हैं और 96 प्रतिशत विद्यार्थी देशभक्ति पाठ्यक्रम के दौरान की जाने वाली सभी गतिविधियों (देशभक्ति ध्यान, देशभक्ति डायरी, आत्मचिंतन, चर्चा आदि) के बारे में जानते हैं। 89 प्रतिशत विद्यार्थी मानते हैं कि देशभक्ति पाठ्यक्रम में शामिल विषय रुचिकर एवं उपयोगी हैं। 87 प्रतिशत विद्यार्थी मानते हैं कि देशभक्ति पाठ्यक्रम उनके जीवन और अनुभवों के लिए प्रासंगिक है।

उद्देश्य 3— विद्यार्थियों के व्यवहार एवं धारणा पर देशभक्ति पाठ्यक्रम का प्रभाव

परिवार के प्रति विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन

जब विद्यार्थियों से देशभक्ति पाठ्यक्रम के पहले और पाठ्यक्रम के बाद उनके परिवार के साथ बदलते व्यवहार के बारे में पूछा गया तब पहले से 30 प्रतिशत अधिक विद्यार्थियों ने माना कि माता-पिता की आज्ञा मानना और उनका आदर करना आदि में उनके व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन आया है।

तालिका 2— परिवार के प्रति विद्यार्थी के व्यवहार में परिवर्तन

व्यवहार में परिवर्तन	देशभक्ति पाठ्यक्रम से पहले (हाँ %)	देशभक्ति पाठ्यक्रम के बाद (हाँ %)	परिवर्तन में वृद्धि (%)
माता-पिता की आज्ञा मानना और उनका आदर करना	59	89	30
घर के अन्य बड़ों का सम्मान करना	51	89	38
घर के काम में माता-पिता की मदद करना	43	91	48
भाई-बहनों के साथ प्रेमपूर्वक रहना तथा उनकी सहायता करना	68	90	22
माता-पिता की समस्याओं को समझने का प्रयास करना	35	89	54

पहले से 38 प्रतिशत अधिक विद्यार्थियों ने माना कि घर के बड़ों का सम्मान करने, पहले से 48 प्रतिशत अधिक विद्यार्थियों ने माना कि घर के काम में माता-पिता की मदद करने, पहले से 22 प्रतिशत विद्यार्थियों ने माना कि भाई-बहनों के साथ प्रेमपूर्वक रहने और उनकी सहायता करने तथा पहले से 54 प्रतिशत विद्यार्थियों ने माना कि माता-पिता की समस्याओं को समझने का प्रयास करने आदि में

सकारात्मक परिवर्तन आया है। इससे स्पष्ट होता है कि देशभक्ति पाठ्यक्रम ने विद्यार्थियों के सकारात्मक व्यवहार में संवेदनशीलता और सामाजिक जवाबदेही में सुधार हुआ है। (तालिका 2)

स्कूल संबंधी कार्यों के प्रति विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन

1. **शैक्षिक सामग्री का सँभाल**— 57 प्रतिशत (26–83 प्रतिशत) अधिक विद्यार्थियों ने माना कि देशभक्ति पाठ्यक्रम के प्रभाव से शैक्षिक सामग्री को प्रभावी ढंग से सँभालने को लेकर उनके व्यवहार में सकारात्मक वृद्धि हुई है।
2. **वर्दी का सम्मान**— 46 प्रतिशत (22–68 प्रतिशत) अधिक विद्यार्थियों ने माना कि देशभक्ति पाठ्यक्रम के बाद से उनका अपनी वर्दी के प्रति सम्मान और अधिक बढ़ गया। यह विद्यार्थियों में वर्दी के प्रति अधिक गर्व और समर्पण का संकेत करता है।
3. **समय की पाबंदी**— 31 प्रतिशत (57–88 प्रतिशत) अधिक विद्यार्थियों ने माना कि देशभक्ति पाठ्यक्रम के प्रभाव से वे अब समय पर स्कूल आते हैं और समय पर घर लौटते हैं। यह समय प्रबंधन के प्रति बेहतर समझ और पालन के सुधार का संकेत देता है।
4. **नियमित उपस्थिति**— 44 प्रतिशत (45–89 प्रतिशत) अधिक विद्यार्थियों ने माना कि देशभक्ति पाठ्यक्रम के बाद से वे अपनी सभी कक्षाओं में नियमित रूप से उपस्थित रहते हैं।
5. **ध्यानपूर्वक अधिगम**— 29 प्रतिशत (35–64 प्रतिशत) अधिक विद्यार्थियों ने माना कि देशभक्ति पाठ्यक्रम के बाद से वे ध्यानपूर्वक मन लगाकर अध्ययन करने लगे हैं।
6. **शिक्षक की बातों को सुनना व उनका सम्मान करना**— 34 प्रतिशत (39–73 प्रतिशत) अधिक विद्यार्थियों ने माना कि देशभक्ति पाठ्यक्रम के बाद से वे शिक्षकों की बातों को और अधिक ध्यान से सुनने लगे हैं।
7. **समय प्रबंधन**— 39 प्रतिशत (32–71 प्रतिशत) अधिक विद्यार्थियों ने माना कि देशभक्ति पाठ्यक्रम के बाद से वे समय का सदुपयोग बेहतर तरीके से करने लगे हैं।
8. **सहपाठियों का सम्मान**— 58 प्रतिशत (29–87 प्रतिशत) अधिक विद्यार्थियों ने माना कि देशभक्ति पाठ्यक्रम के बाद से वे अपने सभी सहपाठियों की बातों का सम्मान करने लगे हैं।
9. **साफ-सफाई का ध्यान**— 68 प्रतिशत (23–91 प्रतिशत अधिक विद्यार्थियों ने माना कि देशभक्ति पाठ्यक्रम के बाद से वे अब अपनी कक्षा और आस-पास की साफ-सफाई का और अधिक ध्यान रखने लगे हैं।
10. **संसाधनों का संरक्षण**— 59 प्रतिशत (34–93 प्रतिशत) अधिक विद्यार्थियों ने माना कि जब कक्षा में कोई मौजूद नहीं होता तब वे अपनी कक्षा में लाइट और पंखे बंद कर देते हैं।

अवलोकन के दौरान शोधार्थी ने भी पाया कि अब अधिकांश बच्चे, जब कक्षा में कोई मौजूद नहीं होता तब वे अपनी कक्षा में लाइट और पंखे बंद कर देते हैं। 70 प्रतिशत (24–94 प्रतिशत) अधिक विद्यार्थी पानी का सदुपयोग करने लगे हैं जबकि 69 प्रतिशत (22–91

प्रतिशत) अधिक विद्यार्थियों ने माना कि अब वे अपने विद्यालय भवन का सम्मान करते हैं और विद्यालय की संपत्ति में कोई तोड़-फोड़ आदि नहीं करते। यह सामूहिक संपत्ति के प्रति जिम्मेदारी और जागरूकता का संकेत देता है। तालिका 3 दर्शाती है कि स्कूल संबंधी कार्यों के प्रति विद्यार्थियों के व्यवहार में; जैसे विद्यार्थियों के ध्यानपूर्वक अधिगम में 29 प्रतिशत, समय की पाबंदी में 31 प्रतिशत, शिक्षक की बातों को सुनने व उनका सम्मान करने में 34 प्रतिशत, समय प्रबंधन में 39 प्रतिशत विद्यार्थियों की संख्या आदि में सकारात्मक वृद्धि तो हुई है, परंतु अन्य की तुलना में यह प्रतिशत कम है। यहाँ अभी और प्रयास करने की आवश्यकता है।

समाज/राष्ट्र के प्रति विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन

1. **देशभक्तों के संघर्ष का सम्मान**— 38 प्रतिशत (56– 94 प्रतिशत) अधिक विद्यार्थियों ने बताया कि देशभक्ति पाठ्यक्रम के बाद से वे अपने देशभक्तों और स्वतंत्रता सेनानियों के संघर्षों को समझते हैं और उनका सम्मान करते हैं।
2. **आवश्यकतानुसार दूसरों की सहायता करना व संवेदनशील होना**— 52 प्रतिशत (24–76 प्रतिशत) अधिक विद्यार्थियों ने बताया कि देशभक्ति पाठ्यक्रम के बाद से वे आवश्यकतानुसार एक-दूसरे की सहायता करने लगे हैं और एक-दूसरे के प्रति संवेदनशील होने लगे हैं। यह विद्यार्थियों के बीच अधिक सहायक

तालिका 3— स्कूल संबंधी कार्यों के प्रति विद्यार्थी के व्यवहार में परिवर्तन

	व्यवहार में परिवर्तन	देशभक्ति पाठ्यक्रम से पहले (हाँ %)	देशभक्ति पाठ्यक्रम के बाद (हाँ %)	परिवर्तन (%)
1.	पाठ्यपुस्तकों और अन्य सामग्रियों को सावधानी से संभालना	26	83	57
2.	अपनी वर्दी के प्रति सम्मान प्रदर्शित करते हुए पूर्ण वर्दी में आना	22	68	46
3.	समय पर स्कूल आना व घर सही समय पर वापस पहुँचना	57	88	31
4.	अपनी सभी कक्षाओं में नियमित रूप से उपस्थित होना	45	89	44
5.	मन लगाकर अधिगम करना	35	64	29
6.	शिक्षक की बातों को ध्यान से सुनना व उनका सम्मान करना	39	73	34
7.	समय का सदुपयोग करना	32	71	39
8.	अपने सहपाठियों की बातों का सम्मान करना	29	87	58
9.	कक्षा और अपने आस-पास गंदगी न फैलाना	23	91	68
10.	जब कक्षा में कोई मौजूद न हो तो अपनी कक्षा में लाइट और पंखे बंद करना	34	93	59
11.	पानी का सदुपयोग करना	24	94	70
12.	विद्यालय भवन का सम्मान करना	22	91	69

और समर्थ भावना की ओर एक महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखाता है।

3. **जल संरक्षण व पेड़ों की देखभाल करना—** 42 प्रतिशत (23–65 प्रतिशत) अधिक विद्यार्थियों ने बताया कि देशभक्ति पाठ्यक्रम के बाद से वे और अधिक संख्या में जल संरक्षण व पेड़ों के देखभाल करने लगे हैं।
4. **जानवरों के प्रति संवेदनशीलता—** 40 प्रतिशत (35–75 प्रतिशत) अधिक विद्यार्थियों ने बताया कि देशभक्ति पाठ्यक्रम के बाद उनकी जानवरों के प्रति सहानुभूति में वृद्धि हुई है तथा वे जानवरों के प्रति अधिक संवेदनशील हुए हैं।
5. **सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा करना—** 40 प्रतिशत (49–89 प्रतिशत) अधिक विद्यार्थियों ने बताया कि वे देशभक्ति पाठ्यक्रम के बाद से सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा और अधिक करने लगे हैं।
6. **सभी को समान समझना और उनका सम्मान करना—** 25 प्रतिशत (44–69 प्रतिशत) अधिक विद्यार्थियों ने बताया कि देशभक्ति पाठ्यक्रम के बाद से वे जाति, लिंग, धर्म, रंग आदि पर बिना भेदभाव किए सभी को समान समझते हैं और उनका सम्मान करते हैं।
7. **सड़क पार करते समय/साइकिल चलाते समय यातायात नियमों का पालन करना—** 64 प्रतिशत (25–89 प्रतिशत) अधिक विद्यार्थियों ने बताया कि देशभक्ति पाठ्यक्रम के बाद से वे यातायात नियमों का पालन और अधिक करने लगे हैं।

शोध में पाया गया कि 31 प्रतिशत विद्यार्थी अभी भी जाति, लिंग, धर्म, रंग आदि के आधार पर भेदभाव करते हैं और अपने साथियों व समाज के लोगों का सम्मान नहीं करते। 35 प्रतिशत विद्यार्थियों को अभी जल-संरक्षण व पेड़ों के प्रति संवेदनशील बनाने की आवश्यकता है। इस प्रकार शिक्षक समाज को इस प्रतिशत को कम करने के लिए और अधिक कार्य करने की आवश्यकता है।

तालिका 4— समाज/राष्ट्र के प्रति छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन

व्यवहार में परिवर्तन	देशभक्ति पाठ्यक्रम से पहले (हाँ %)	देशभक्ति पाठ्यक्रम के बाद (हाँ %)	परिवर्तन (%)
सड़क पार करते समय/साइकिल चलाते समय यातायात नियमों का पालन करना	25	89	64
जाति, लिंग, धर्म, रंग आदि पर भेदभाव किए बिना सभी को समान समझना और उनका सम्मान करना	44	69	25
सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा करना	49	89	40
जानवरों के प्रति संवेदनशीलता	35	75	40
जल संरक्षण व पेड़ों की देखभाल करना	23	65	42
आवश्यकतानुसार दूसरों की सहायता करना व लोगों के प्रति संवेदनशील होना	24	76	52

देशभक्तों व स्वतंत्रता सेनानियों के संघर्ष का सम्मान	56	94	38

समाज/राष्ट्र की समस्याओं के प्रति विद्यार्थियों की धारणा में परिवर्तन

तालिका 5 दिखाती है कि देशभक्ति पाठ्यक्रम के बाद विद्यार्थियों की धारणाएँ कैसे बदली हैं। पाठ्यक्रम से पहले और बाद के अंतर के संदर्भ में जानकारी प्राप्त करते हुए पाया गया कि विद्यार्थियों की धारणा में परिवर्तन के साथ-साथ जिम्मेदारी लेने की भावना में भी वृद्धि हुई है।

तालिका 5

धारणा में परिवर्तन	देशभक्ति पाठ्यक्रम से पहले (हाँ %)	देशभक्ति पाठ्यक्रम के बाद (हाँ %)
दोस्तों के बीच बढ़ते झगड़ों का जिम्मेदार कौन है?		
(क) हम स्वयं	26	77
(ख) हमारे दोस्त या समाज के अन्य लोग	74	23
प्रदूषण फैलाने का जिम्मेदार कौन है?		
(क) हम स्वयं	34	89
(ख) हमारा समाज या अन्य	66	21
बिजली और पानी के संकट के लिए कौन जिम्मेदार है?		
(क) हम स्वयं	27	77
(ख) हमारी सरकार	73	23
अनुशासनहीनता और भ्रष्टाचार के लिए कौन जिम्मेदार है?		
क) हम स्वयं	31	81
(ख) हमारी शिक्षा और सरकार	69	19
यातायात नियमों का पालन न करने के लिए कौन जिम्मेदार है?		
(क) हम स्वयं	41	82
(ख) यातायात के नियमों में सख्ती का न होना	59	18
समाज में बढ़ते अंधविश्वास और रूढ़िवादिता का जिम्मेदार कौन है?		
(क) हम स्वयं और हमारा परिवार	55	79
(ख) हमारी शिक्षा व्यवस्था	45	21
बढ़ती हुई असंवेदनशीलता और नैतिक मूल्यों के पतन का जिम्मेदार कौन है?		
(क) हम स्वयं	32	89
(ख) हमारी शिक्षा व्यवस्था	68	11

- दोस्तों के बीच बढ़ते झगड़ों का जिम्मेदार कौन है? जहाँ देशभक्ति पाठ्यक्रम से पहले केवल 26 प्रतिशत विद्यार्थी अपने दोस्तों के बीच झगड़ों की जिम्मेदारी खुद पर लेते थे, वहीं 74 प्रतिशत विद्यार्थी झगड़ों के लिए अपने दोस्तों और समाज के अन्य लोगों को जिम्मेदार मानते थे, परंतु पाठ्यक्रम के बाद अब 77 प्रतिशत विद्यार्थी झगड़ों के लिए अपनी भूमिका को अहम मानते पाए गए।
- प्रदूषण एवं गंदगी फैलाने का जिम्मेदार कौन है? जहाँ देशभक्ति पाठ्यक्रम से पहले केवल 34 प्रतिशत विद्यार्थी प्रदूषण एवं गंदगी फैलाने का जिम्मेदार खुद को मानते थे, जबकि 66 प्रतिशत विद्यार्थी प्रदूषण फैलाने के लिए अपने दोस्तों और समाज के अन्य लोगों को इसके लिए जिम्मेदार मानते थे, वहीं पाठ्यक्रम के बाद अब 89 प्रतिशत विद्यार्थी प्रदूषण एवं गंदगी फैलाने में अपनी भूमिका को अहम मानते पाए गए।

- बिजली और पानी के संकट के लिए कौन जिम्मेदार है? जहाँ देशभक्ति पाठ्यक्रम से पहले केवल 27 प्रतिशत विद्यार्थी बिजली और पानी के संकट के लिए खुद को जिम्मेदार मानते थे तथा 73 प्रतिशत विद्यार्थी बिजली और पानी के संकट के लिए अपनी सरकार को जिम्मेदार मानते थे। वहीं पाठ्यक्रम के बाद अब 77 प्रतिशत विद्यार्थी बिजली और पानी के संकट के लिए अपनी भूमिका को अहम मानते पाए गए।
- अनुशासनहीनता और भ्रष्टाचार के लिए कौन जिम्मेदार है? जहाँ पाठ्यक्रम से पहले केवल 31 प्रतिशत विद्यार्थी अनुशासनहीनता और भ्रष्टाचार के लिए स्वयं को जिम्मेदार मानते थे। 69 प्रतिशत विद्यार्थी अनुशासनहीनता और भ्रष्टाचार के लिए अपनी शिक्षा और सरकार को जिम्मेदार मानते थे, वहीं पाठ्यक्रम के बाद अब 81 प्रतिशत विद्यार्थी अनुशासनहीनता और भ्रष्टाचार के लिए अपनी भूमिका को अहम मानते पाए गए।
- यातायात नियमों का पालन न करने के लिए कौन जिम्मेदार है? जहाँ पाठ्यक्रम से पहले केवल 41 प्रतिशत विद्यार्थी यातायात नियमों का पालन न करने के लिए और 59 प्रतिशत विद्यार्थी यातायात नियमों में सख्ती न होने के कारण उनका पालन न करने के लिए स्वयं को जिम्मेदार मानते थे। पाठ्यक्रम के बाद अब 82 प्रतिशत विद्यार्थी यातायात नियमों का पालन न करने के लिए अपनी भूमिका को अहम मानते पाए गए।
- समाज में बढ़ते अंधविश्वास का जिम्मेदार कौन है? जहाँ पाठ्यक्रम से पहले केवल 55 प्रतिशत विद्यार्थी समाज में बढ़ते अंधविश्वास के लिए स्वयं को जिम्मेदार मानते थे और 45 प्रतिशत विद्यार्थी समाज में बढ़ते अंधविश्वास के लिए शिक्षा व्यवस्था को जिम्मेदार मानते थे। पाठ्यक्रम के बाद अब 79 प्रतिशत विद्यार्थी समाज में बढ़ते अंधविश्वास के लिए अपनी भूमिका को अहम मानते पाए गए।
- बढ़ती हुई असंवेदनशीलता और नैतिक मूल्यों के पतन का जिम्मेदार कौन है? जहाँ पाठ्यक्रम से पहले केवल 32 प्रतिशत विद्यार्थी समाज में बढ़ती हुई असंवेदनशीलता का जिम्मेदार स्वयं को मानते थे, जबकि 68 प्रतिशत विद्यार्थी समाज में बढ़ती हुई असंवेदनशीलता का जिम्मेदार शिक्षा व्यवस्था को मानते थे, वहीं पाठ्यक्रम के बाद अब 89 प्रतिशत विद्यार्थी समाज में बढ़ती हुई असंवेदनशीलता की जिम्मेदारी के लिए अपनी भूमिका को अहम मानते पाए गए।
- इस प्रकार स्पष्ट है कि देशभक्ति पाठ्यक्रम के प्रभाव से विद्यार्थियों की सोच और व्यवहार में गहरा परिवर्तन पाया गया। इस परिवर्तन के साथ ही विद्यार्थियों में जिम्मेदारी और सामाजिक सहभागिता की भावना में भी सुधार दिखाई दिया। वे अब अपनी समस्याओं के लिए समाज या अन्य लोगों पर दोषारोपण करने के बजाय अपनी भूमिका को सामाजिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण मानते हैं। इस तरह अब वे समाज के विभिन्न मुद्दों में सक्रिय रूप से योगदान देने के लिए प्रेरित पाए गए।

विद्यार्थियों में सकारात्मक बदलाव और आत्मनिर्भरता का विकास

83 प्रतिशत विद्यार्थी मानते हैं कि देशभक्ति पाठ्यक्रम में प्रयुक्त विधियों के द्वारा विषयवस्तु को पढ़ना उचित है। 91 प्रतिशत विद्यार्थी मानते हैं कि देशभक्ति पाठ्यक्रम बहुत ही आकर्षक, मनोरंजक होने के साथ-साथ शिक्षाप्रद भी है। 95 प्रतिशत विद्यार्थियों का मानना है कि ऐसे पाठ्यक्रम से उनकी सोच या दृष्टिकोण में सकारात्मक बदलाव आया है।

तालिका 6— पाठ्यक्रम के प्रति विद्यार्थियों में सकारात्मक बदलाव और आत्मनिर्भरता

प्रश्न	प्रतिशत (हाँ %)
देशभक्ति पाठ्यक्रम में उपयोग की गई विधियों के द्वारा विषयवस्तु को पढ़ना उचित है	83
देशभक्ति पाठ्यक्रम आकर्षक, आवश्यक, अनिवार्य एवं शिक्षाप्रद है	91
देशभक्ति पाठ्यक्रम शुरू करने के बाद से देशभक्ति के प्रति अपनी समझ या दृष्टिकोण में कोई बदलाव देखा है	95
छात्रों को देशभक्ति और राष्ट्रीय मूल्यों के बारे में सीखने की जरूरत है	91
अब हम अपनी समस्याओं का समाधान, हम स्वयं निकाल सकते हैं	88

91 प्रतिशत विद्यार्थी मानते हैं कि विद्यार्थियों को राष्ट्रीय मूल्यों और देशभक्ति के महत्व की जानकारी होना जरूरी है। 88 प्रतिशत विद्यार्थी समस्याओं का समाधान खुद से निकालने का समर्थन करते हैं, जो आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहित करता है। विद्यार्थियों के जवाबों से स्पष्ट होता है कि देशभक्ति पाठ्यक्रम के प्रति उनमें जागरूकता और समझ है। उन्हें इस पाठ्यक्रम के महत्व और उपयोग की अच्छी जानकारी है, जो उनके जीवन में सकारात्मक परिणाम लाने में मदद करती है। इससे सामाजिक, राष्ट्रीय और आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में उनकी सकारात्मक योगदान की संभावना होती है।

निष्कर्ष

देशभक्ति पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में राष्ट्रीयता और सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। शोध अध्ययन में पाया गया कि देश के प्रति राष्ट्रभक्ति और प्रेम को बढ़ावा देने में देशभक्ति पाठ्यक्रम महत्वपूर्ण है। यह पाठ्यक्रम संभावित रूप से राष्ट्रीय इतिहास का अध्ययन, महत्वपूर्ण घटनाओं, नेताओं और देश के लिए किए गए बलिदान पर जोर देता है। विद्यार्थियों को राष्ट्र के साथ संबंध स्थापित करने के लिए उन्हें ऐतिहासिक ज्ञान प्रदान करता है तथा उनके दिमाग और व्यवहार पर अपना प्रभाव डालता है। देशभक्ति पाठ्यक्रम नागरिक मूल्यों के प्रति विद्यार्थियों को जागरूक करने का काम करता है, जैसे— संविधान का सम्मान तथा लोकतांत्रिक सिद्धांतों और राष्ट्र-निर्माण में सक्रिय भागीदारी। इस अध्ययन के परिणाम इस बात कि पुष्टि करते हैं कि समाज के लिए जिम्मेदार नागरिकों का विकास कितना महत्वपूर्ण है और हमारे विद्यार्थी इस दिशा में निरंतर कितना अग्रसर हैं। देशभक्ति पाठ्यक्रम राष्ट्रीय संस्कृति और धरोहर के संरक्षण और प्रोत्साहन पर जोर देता है। देशभक्ति पाठ्यक्रम के लागू होने के बाद विद्यार्थियों के व्यवहार क्षेत्र में व्यापक विस्तार हुआ है। इस पाठ्यक्रम से विद्यार्थियों

में देश के प्रति राष्ट्रभक्ति में वृद्धि, इतिहास के प्रति गहरी समझ, सामाजिक मूल्यों के प्रति जागरूकता, भावनात्मक संबंध और सांस्कृतिक संरक्षण में सकारात्मक परिवर्तन नजर आता है, परंतु अभी भी इसके प्रभाव की गहराई से जानने और विस्तृत अध्ययन की आवश्यकता है। यह अध्ययन भविष्य में विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन पर देशभक्ति पाठ्यक्रम के प्रभाव का मूल्यांकन कर सकता है और यह जाँच कर सकता है कि देशभक्ति विषयों या क्रियाओं का विद्यार्थियों के शैक्षिक उत्तीर्णता पर कोई सकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव होता है या नहीं। यह अध्ययन देशभक्ति पाठ्यक्रम के दीर्घकालिक प्रभाव के अध्ययन हेतु सुझाव देता है कि जो विद्यार्थी देशभक्ति शिक्षा को प्राप्त करते हैं, क्या वे अपने वयस्क जीवन में भी राष्ट्रभक्ति और सक्रिय नागरिकता का प्रदर्शन कर उसे चरितार्थ करते हैं। अध्ययन प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए उचित प्रशिक्षण और संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करने पर बल देता है, क्योंकि शिक्षकों का सकारात्मक दृष्टिकोण और प्रभावी शिक्षण विधियाँ इस पाठ्यक्रम और विद्यार्थियों की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

सुझाव

विद्यार्थियों में देशभक्ति की भावना का विकास करने के लिए उनसे कुछ ऐसी गतिविधियाँ कराई जाएँ, जिससे वे देशभक्ति मूल्यों के प्रति जागरूक हों, जैसे— मौलिक कर्तव्यों से संबंधित बच्चों से कोई गतिविधि करवाना या हमारे राष्ट्रीय प्रतीकों से संबंधित प्रश्न/पहेली (क्विज) का आयोजन करना आदि। देशभक्ति पाठ्यक्रम को ध्यान में रखते हुए शिक्षकों द्वारा ऐसी अधिगम शिक्षण सामग्री (LTM) का प्रयोग करना चाहिए, जो बच्चों में देशभक्ति की भावना का विकास कर सकें, जैसे— बच्चों को देश के प्रति अपने उत्तरदायित्व और उनके बलिदान से संबंधित अधिगम सामग्री देना, जिससे विद्यार्थी में अपने देश के प्रति सम्मान की भावना विकसित हो और वह देश के प्रति बलिदान देने के लिए प्रतिबद्ध रहे।

संदर्भ

अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रौद्योगिकी. 2019. *भारत में स्कूल पाठ्यक्रम में राष्ट्रभक्ति शिक्षा का अध्ययन*. 10(2), पृ.सं. 85–91. अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रौद्योगिकी.

कविता, एस. और एस. पूनम. 2018. उत्तर प्रदेश में प्राथमिक विद्यालय पाठ्यक्रम में देशभक्ति मूल्यों के समावेश का विश्लेषण— एक अध्ययन. *शिक्षा और अभ्यास पत्रिका*. 9(13), पृ.सं. 92–96.

जयश्री, एम. और आर. राजलक्ष्मी. 2018. भारत के स्कूलों में राष्ट्रभक्ति शिक्षा के पाठ्यक्रम के ढाँचे का अध्ययन— एक रूपरेखा. *शैक्षिक अनुसंधान और प्रौद्योगिकी*. 9(3), पृ.सं. 103–112.

मृदुला, एम. 2017. स्कूल पाठ्यक्रम में देशभक्ति और राष्ट्रवाद के समावेश का विश्लेषण— कक्षा 6 से 10 तक की सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन. 6(1), पृ.सं. 33–45. अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान और अन्यविज्ञान अनुसंधान.

रा.शै.अ.प्र.प. 2006. *सामाजिक विज्ञान शिक्षा— एक चिंतनशील दृष्टिकोण*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

राधिका, वी. और टी. शिवानी. 2020. माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रभक्ति पाठ्यक्रम के विकास पर अध्ययन. *भारतीय मनोविज्ञान की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका*. 8(2), पृ.सं. 974–979.

रितु, चंद्र. 2020. दिल्ली के स्कूलों में राष्ट्रभक्ति पाठ्यक्रम की जागरूकता और कार्यान्वयन का मूल्यांकन, मानविकी. *कला, चिकित्सा और विज्ञान अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका*. 8(2), पृ.सं. 46–53.

शंकर, एस. उमा और संगीता जैन. 2018. शिक्षा में राष्ट्रीय पहचान और देशभक्ति के विकास में भूमिका— बच्चों के बीच एक अध्ययन. *शैक्षिक अनुसंधान और प्रौद्योगिकी*. 4(1), पृ.सं. 47–55.

समिधा, एस. और एस. निधि. 2020. शिक्षा के माध्यम से नागरिकता और देशभक्ति मूल्यों का समावेश के लिए दिल्ली राज्य शिक्षा पाठ्यक्रम रूपरेखा 2018–19 का अध्ययन. *शैक्षिक प्रौद्योगिकी और क्रियात्मक अनुसंधान*. 8(1), पृ.सं. 50–55.

हिना. 2018. दिल्ली के माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों के राष्ट्रवाद और देशभक्ति मूल्यों के प्रति जागरूकता और दृष्टिकोण— एक अध्ययन. *मानविकी और सामाजिक विज्ञान अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका*. 3(3), पृ.सं. 1–9.

हिरेन, ए.आर. 2019. गुजरात में माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की मूल्य प्रणाली पर देशभक्ति पाठ्यक्रम के प्रभाव का आकलन. *प्रबंधन और सामाजिक विज्ञान में अध्ययन का अंतिम अनुसंधान*. 8(9), पृ.सं. 203–211.

http://samagrashiksha.gov.in

http://www.edudel.nic.in/welcome_folder/DeshbhaktiCurriculum.htm

https://journalsofindia.com/national-curriculum-framework-ncf-2005

https://ncert.nic.in/pdf/nep/Policy_1986_eng.pdf

https://www.constitutionofindia.net/articles/preamble

https://www.education.gov.in/en/national-education-policy-2020-